Critical study of the stories of Dalit story writer Buddha Sharan Hans ji
(दलित कहानीकार बुध्द शरण हंस जी के कहानियों का समीक्षात्मक अध्ययन)

Jagdishchandra Bairagi*; Dr. Aruna Dube; Dr. Geeta Nayak*****
*Research scholar, Hindi study school, Vikram University, Ujjain, MP;
**Assistant-Professor, Hindi, Sh. Kalidas Girls College, Ujjain, MP;
***Acharya and former President, Hindi Study School, Vikram University, Ujjain, MP; India
Corresponding author:jcb1480@gmail.com

DOI: 10.52984/ijomrc2206

सार:

साहित्य समाज का दर्पण माना जाता है। साहित्य समाज का दर्पण होने के कारण साहित्य के अंतर्गत समाज के हर वर्ग का वर्णन नजर आना स्वाभाविक है। भारतीय साहित्य में आदिकाल के साहित्य से लेकर हिंदी साहित्य तक दलित वर्ग का चित्रण व्यापक पैमाने में देखने को मिलता है। इस भारतीय समग्र साहित्य में अस्पृश्यता की पीड़ा, दलित नारी की समस्या और उनका शोषण आदि अन्यायओं के प्रति आक्रोश विद्रोह व्यक्त होता दिखायी देता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में बुद्ध शरण हंस जी के कहानियों का समीक्षात्मक अध्ययन कर दलित साहित्य विकास यात्रा में उनके महत्वपूर्ण योगदान को सूचीबद्ध किया गया है।

शब्द संकेत: अधम्, गरीब, दलित

भूमिका:

हिंदी साहित्य के प्रख्यात दलित साहित्यकारों में से बुद्ध शरण हंस जी का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। आपका जन्म 1942 ई. में बिहार के जिला गया के निकट स्थित तिलोरा गाँव में हुआ था। बुद्ध शरण हंस जी बचपन से कविता, कहानी, निबंध, रिपोर्ट, आलोचना, नाटक, एकांकी लिखने में व्यस्त थे। आपने साहित्य के लगभग हर प्रकार के अतंर्गत रचनाएँ की हैं। कॉलेज जीवन में हस्त लिखित पत्रिका का लेखन और संपादन कर अपनी रचना धार्मिता को जीवित रखना था। 1975 से 1980 तक डॉ. अबेडकर विचार मंच नाम की अपनी संस्था बनाकर बाबा साहब अबेडकर के विचारों का प्रचार–प्रसार करते रहे।

बुध्दशरण हंस जी को भारतीय दलित साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा अबेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार (1999) तथा बिहार सरकार द्वारा बाबा साहब भीमराव अंबेडकर पुरस्कार (2002) प्राप्त हुआ है।

बुद्ध शरण हंस जी ने हिंदी दलित कहानी को अनेक कहानीकारों ने सशक्त जमीन दी है जिनके कहानियों में सारे सामाजिक विद्रोह के बाद रचनात्मक शक्ति भी है। बुध्दशरण हंस उन कथाकारों में से एक माने जाते हैं, जो दलित साहित्य आन्दोलन के एक सशक्त रचनाकार माने जाते हैं। उन्होंने अनेक कहानियाँ लिखी हैं जो समकालीन समय को केंद्र में रखकर, जिसमे दलित जीवन की वेदना को समाज के सम्मुख प्रदर्शित करके उस वेदना को नयी वाचा प्रदान की है। उनकी रचनाओं की एक झाकी निम्न प्रस्तुत है।

1. ब्रह्मज्ञान

इस कहानी का प्रमुख पात्र है पंडित चोकट उपाध्याय उसकी पत्नी और पुत्र गूदर है। पंडित चोकट का एकलौता पुत्र गूदर १० वर्ष का हो चला था। उसे ब्रह्मज्ञान दे देना चाहिए नहीं तो उसको दस साल पूरा होने से उचित समय नहीं होता। इसीलिए बेटे के लिए एक उचित समय निकाल लेता है। उसे ब्रह्मज्ञान देने का कार्य शुरू कर देता है। ब्रह्मज्ञान के नाम पर कैसे ब्राह्मण लोग समाज के लोगों को शोषित करते हैं उससे संबंधित ज्ञान देने के साथ–साथ कहानी आगे बढ़ती है। गूदर के एक प्रश्न पर पंडित कहता है ***"संस्कृत याद करलो तब तो सारा हिंदू तुम्हारा गुलाम बन जायेगा। जब तक नहीं याद हो तब तक ये कुछ शब्दों को बोलकर नमः नमः स्वाहा स्वाहा कर देने से भी सारा काम चल जाएगा।"***[1]

इस प्रकार से समाज के लोगों को ब्राह्मण और ब्राह्मणवाद के नाम पर लोगों से पैसे वसूल करने की शिक्षा दी जाती है। ब्रह्मज्ञान के बहाने जीवन यापन के लिए पंडित लोग अपने संतान को किस प्रकार समाज में लोगों को धर्म, पूजा–पाठ के नाम पर शोषण करना सिखाते हैं यह सभी बाते इस कहानी में उभरकर आयी हैं।

2. रे अधम मुझे मत बेच

समाज में रहनेवाले उच्च वर्ग के ये पंडित और पुजारी लोग समाज की कुछ कमियों को पूँजी बनाकर कैसे लोगों को वंचित करते हैं इसका सुंदर चित्रण इस कहानी में हुआ है। पंडित बटोरन मिश्र अपनी पत्नी और विवाहित बेटी लक्ष्मी के साथ अढ़वाँ गाँव में रहते थे। पुजारी मिश्र अनपढ़ था। किंतु पक्का कर्मकांडी था। उसी गाँव के भगवती मंदिर में पूजा–पाठ करके जीवन चलाता था।

एक दिन शाम को वह मंदिर के भगवती मूर्ति को बेचने की पूर्व योजना बना लेता है। और अपनी बेटी को साथ रखता है। पत्नी को घर भेजता है। जाड़े की रात में थामस नामक आदमी अपने आदमियों सहित आ जाता है। पंडित बटोरन मिश्र से मंदिर में मिलते ही वह उसे अपनी बेटी से मिलाता है। थामस से कहता है– ''यह मेरी बेटी है, कालेज में पढ़ती है, अंग्रेजी खूब बोलती है।''[2] वह थामस से एक लाख रूपए की बैग ले लेता है और बचे पैसे भी जब थामस से पूछता है तो थामस कहता है कि– ***"भगवती के लिए तो एक लाख रूपये ही बोला था न?"***[3] उसकी नजरे लक्ष्मी पर पड़ी थी। तब बटोरन– ष्हाँ सो तो ठीक है। कहते लोलुपता प्रकट कर देता है। यहाँ कहानीकार ने उनके नीच मनोधर्म का वर्णन किया है। थामस पूरा पैसा बटोरन के हाथ में रखते बोलता है– ***"अच्छा–अच्छा तुम बाहर जाकर मूर्ति पैक करो हम कुछ टका लक्ष्मी को भी दे देता है ठीक?"***[4] बटोरन के बाहर आकर देखने तक वहाँ भगवती मूर्ति गायब, उसको पैक कर बंद कर दिया था। थामस तो अभी लक्ष्मी के साथ बंद कमरे में था। लेकिन अचानक उसको पैक में बंद भगवती और कमरे में थामस के साथ बंद लक्ष्मी को देखते उसका सर चकरा जाता है। उसे उस अधेरे वातावरण, लहू लुहान लक्ष्मी और उगते तार बेतार दिख पड़े जो उसे धिक्कार–धिक्कार कर कह रही है– **रे अधम मुझे मत बेच।**

3. अखंड कीर्तन

इस कहानी में यह चित्रित किया है कि समाज में कई ऐसी महिलाएँ हैं जिनको अपने पति से जो सुख चाहिए वह हासिल नहीं होता। इसीलिए ऐसी स्त्री अन्य पर पुरुषों से सुख प्राप्त करना चाहती हैं। इसी स्त्री का चित्रण अखंड कीर्तन में चित्रित किया गया है।

मिल्की मंजौर गाँव अपनी हैसियत के लिए इसीलिए प्रसिद्ध है कि वहाँ पूरब में स्थित देवी मंदिर है। जो इतना बड़ा मंदिर दस कोस के इलाके में नहीं था। इसी मंदिर में अखंड कीर्तन के लिए सभी प्रकार की तैयारियाँ होने लगी। मंदिर में मंत्र शुरू किए सैकड़ो नर–नारी मंदिर की परिक्रमा करने लगे थे। इधर मदन पुजारी के आदेशानुसार घर की रखवाली के लिए मदन पुजारी घर का दरवाजा खटखटाया तो पंडिताइन दरवाजा खोली। विषय सुनते ही वह कहने लगती है। कि ***"अच्छा किया पंडित ने सांह को खेत की रखवाली करने भेज दिया।"*** मदन के घर आते ही नयनतारा उसे खाने के लिए देती है और उसे कहती है कि आज रात आठ बजे आना। क्योंकि मुझे मंदिर जाना है, वहाँ मुझे मंदिर पहुंचा देना। मंदिर में मुझे आज फेरे लगाना है। रात में कुत्तों से मुझे बहुत डर लगता है। कुंदन ठीक आठ बजे आ जाता है। नयनतारा जो ब्रजबिहारी सिंह की बेटी है वह रेशम की उज्जवल साड़ी में सज–धज कर पूजा का थाल लेकर तैयार रहती है। नयनतारा कुंदन को अपने घर की तरफ से होकर चलने को कहती है। ठीक उसी प्रकार से वह उसे अपने घर के पास ले जाता है तो वह उसे घर का दरवाजा खोलने को कहती है। दोनों टिमटिमाते दीपक में घर के अंदर हो जाते हैं। नयनतारा चमकती रहती है। सुनसान गाँव में अखंड कीर्तन का शोर शराना। इधर नयनतारा भयभीत कुंदन को खूब खिलाती है और पूछती है ***"खाने की इच्छा पूरी हो गयी? हाँ बोलता है तो अब मेरी इच्छा भी पूरी करो"***[5] कहते नयनतारा कुंदन से लिपट जाती है। दोनों कामायी वातावरण में भी अखंड कीर्तन का मद्धिम स्वर, कोनों के परदे से टकरा कर व्यर्थ साबित हो रहा था *हरे रामा! हरे कृष्णा! सीताराम! राधे कृष्णा!*

4. भोज के कुत्ते

जिसका चरित्र उत्तम है वही ब्राह्मण है। जो उग्र है पाखंडी है, बातूनी है, लंपट है. लुच्चा है वह ब्राह्मण तो क्या इन कुत्तों से भी गया गुजरा है। ये बताने का प्रयास कहानीकार ने इस कहानी में किया है।

कहानी की शुरूआत में पाखंडी बातूनी, लुच्चे ब्राह्मण को गीध, चील, कुत्ते कौए के साथ तुलना करते हैं। तिनकौड़ी साहब के बाप के दिवंगत होने के कारण वह अपनी जात बिरादरी को भात देने से पहले ब्राह्मणों को भोज देने का निर्णय लेता है। उसी प्रकार ब्राह्मण भोज में आते हैं। भोजन के समय पर न होने से वह उन्हें शरबत पिलाता है। जब भोजन शुरू हो जाता है तब ब्राह्मणों में एक बूढ़ा ब्राह्मण अपने पोते को जबरदस्ती खिलाते बोलता है– ***"क्यों बे कुत्ते, मुँह! पत्तल पर लड्डु पूरियाँ लुढ़की हैं और तुझे पत्तल चाटने को सूझा है! बेहुदे नहीं खाया जाता है तब अपना काम तो कर। मैंने क्या समझाया था रे।"***[6] बूढ़ा ब्राह्मण खाने के साथ–साथ लड्डु, पूरी चुराकर रख भी लेता है। इसे देखकर परोसनेवाले गुस्से में आ जाते हैं और

उन्हें गालियाँ देने लगते हैं। ब्राह्मणों को लगता है कि ये लोग हमें गालियाँ दे रहे हैं तो साहब को शिकायत करते हैं। जब साहब को इन ब्राह्मणों की असलियत का पता चलता है तब साहब अपने लोगों को आदेश देकर वह उनकी पिटाई कराता है। ब्राह्मण वहाँ से मार खाके श्राप देते भाग निकलते हैं। चोरी की गई लड्डु पूरी सब वहीं मैदान पर लाते हैं। मौका देखते ही लड्डु, पूरियों पर कुत्ते टूट पड़ते। हैं। एक ने कुत्ते को भगाने को कहा तो एक ने– खाने दो भाई, खाने दो जो कुत्ते थे वे भाग गये असली संत ये ही हैं। ये सिर्फ खायेंगी एक दाना भी ये चुराकर नहीं ले जाएगें। इस दृश्य के साथ कहानी समाप्त होता है।

5. धम्म जीवन

अशिक्षा के कारण दलितों में दासता के गुण देखा जाता है। अशिक्षा ने उन्हें गरीब, दरिद्र बनाया है। स्वयं विचार करने की क्षमता की कमी है। ऐसे में उन्हें उचित शिक्षा एवं मार्गदर्शन की आवश्यकता पर ये कहानी आधारित है।

"करमपुर के टोला में एक बौद्ध भिक्षु के आगमन से एक प्रकार का परिवर्तन देखने को मिलता है। वह एक बौद्ध धर्म का प्रचारक के रूप में आकर इनके बीच सहयोग, सहकारिता, एकता आदि बातों का ज्ञान कराता है। साथ ही गौतम बुद्ध ज्योतिबा फुले, अबेडकर इन तीनों महापुरुषों ने भाग्य, भगवान, आत्मा, परमात्मा को अर्धविश्वास माना है। इन सब अर्धविश्वासों से आप बचे, दूर रहे।"[7] इन बातों को समझाता है। गगन पासवान के बेटे के तिलक का उपाय निकालने के संबंध में टोला में भिक्षु ने सभी स्त्री–पुरुष को एकत्रित करके उनको समझाता है। तीनों महापुरुषों की बाणी को बताकर स्वावलंबी बनने से कैसे हम हुआ छूत, ऊँच–नीच आदि भेदभाव से बचते हैं। इतने बड़े समाज मे गगन पासवान के बेटे के तिलक के लिए आवश्यक दरी बिछावन पेट्रोमेक्स नहीं है तो अब आप लोगों के सहयोग से संभव होगा। आप एक दिन का भोजन सामाजिक चंदे में दान करें प्रति परिवार दो किलो चावल या दस रूपये, समाज में दान दें दान आज और अभी हैं। सभी उत्साहपूर्वक तैयार हो जाते हैं। ऐसे सभी चीजें खरीदी जाती है। उन्हें दीनता से बाहर आने का उपदेश देते हैं और स्वावलंबी बनने का तरीका सिखाते हैं। गगन पासवान के घर में समारोह सभी नए चीजों से उल्लास के साथ संपन्न होता है।

बौद्ध भिक्षु तीनों महापुरूषों के उपदेश सुनकर करमपुर टोला के सभी परिवार को तथा बारातियों को बुद्ध धर्म की दीक्षा देकर दोनों गाँवों के लोगों को एक–एक पंचशील का झंडा प्रदान करता है। महापुरूषों के नाम पर जय जयकार से वातावरण गुंजित हो जाता है।

6. शरणं गच्छामि

जगजीवन नगर दुर्गा मंदिर में शाम की आरती होने के साथ कहानी शुरू होती है। पुजारी झींगुर पंडित मुहल्ले के लोगों के सहयोग से बड़ी धूमधाम से दुर्गा देवी पूजा पाठ करने तल्लीन हैं और कमाई में भी उसी मुहल्ले के कुछ युवा सोचना शुरू दिया है। पंडित झीगुंर मुहल्ले में कोई सुधार काम नहीं हुए। सालों से बदले मुहल्लेवालों स्थिति शोचनीय होते जा रहा था। इस विचार पर मुहल्ले के कुछ प्रमुखों के विचार–विमर्श के साथ कहानी आगे बढ़ती कुंदन कमली जैसे लोगों के प्रयास अबेडकर भवन में सभा संपन्न जाती इस सभा में

मोहल्लेवालों अच्छे बुरे के चिंतन बाद दुर्गा देवी मंदिर में जो ब्राह्मण है वहाँ से हटाने बदले विद्यालय खोलने निर्णय होता कुंदन कहता है कि ***"उपाय आसान है असहयोग। हम मंदिर और ब्राह्मण दोनों का असहयोग से बनती है।"***[8]

ठीक उसी प्रकार दिन से मंदिर मुहल्लेवाले जाना बंद कर देते हैं। इससे पंडित झीगुंर परेशान होकर उसी गाँव शराब दुकान खोल देता तथा मंदिर बंद कर देता है। प्रकार कहानी विशेष संदर्भ निर्माण हो जाता शराब दुकान लोग नहीं जाते बदले अबेडकर भवन में रविदास की क्रांतिकारी कविता गातें गुरू रैदास करो दंडौती। जगजीवन नगर दुर्गा मंदिर पर नवयुवक कब्जा करके वहाँ रविदास शिक्षा सदन का लटकाते हैं। अपने समाज के नेताओं की तसवीर रँगाते ये सब कुंदन और कमली जैसे लोगों के प्रयास से सम्भव होता है। और दोनो के शादी साथ कहानी समाप्त हो जाती है।

7. दर्शन

कहानीकार **देव दर्शन** कहानी के जरीए पंडितों की नीच कार्यों का परिचय कराने का प्रयत्न किया है। इस कहानी में राजगुरू एक दिन अयोध्या आ जाता है। वहाँ उसका परिचय एक पंडित से हो जाता है वह दर्शन कराने लिए तैयार हो जाता है। जिसके लिए वह धन की अपेक्षा करता राजगुरू, पंडित से प्रश्न पूछता कि ***"देव दर्शन के लिये अछूतों को मंदिर में जाने की है? अब अछूतो की बात करे यजमान। वैसे कोई कहकर तो नहीं जाता है कि हम अद्‌भुत हैं, और न हम किसी अद्‌भुत को मंदिर में ले जाते हैं। लेकिन इस भीड़–भाड़ में ससुरे घुस ही जाते होंगे। कौन जाने?"***[9] ऐसे बातों में उलझे राजगुरू, पंडित से पूछता है कि मुझे मांस, मदिरा और छोखड़ी चाहिए मिलेगा? पंडित राजगुरू से कहता है कि ***"आप मेरे घर चलो वहीं सब कुछ इतंजाम कर देंगे भक्त ही भगवान होता है। भक्त को खुश करना भगवान को खुश करने के बराबर है।"***[10]

इस प्रकार पंडित का, भगवान दर्शन के लिए आनेवाले भक्तों को दर्शन के नाम पर घर में स्त्रियों को रखकर धंधा चलाने जैसे नीच काम करनेवाले पंडित को राजगुरू अपनी जाति बता देता है कि मैं अछूत हूँ क्या अब देव दर्शन कराओगे? तब पंडित का बोलना बंद हो जाता है। इससे अछूतों पर सामाजिक शोषण का पता चलता है। राजगुरू पंडित को ५ रूपये देकर दर्शन कराने को मजबूर कर देता है और उसी से अयोध्या के सभी मंदिरों का दर्शन कराता है। आखिर पंडित फिर उसे कहता है क्या घर चलोगे सब कुछ का इतंजाम है? तब राजगुरू उससे ऐसे शब्दों से उसकी नीच कार्यों की निंदा करते हुए कहता है कि– ***"तुम लोग जैसा नीच नहीं हूँ। भगवान के नाम पर भोगवान का धंधा करते शर्म नहीं आती। भगवान के नाम पर बहू–बेटियों का धंधा करते हो छीछी"***[11] और वह चला जाता है।

8. तीन महाप्राणी

यह कहानी संकलन (तीन महाप्राणी) की आखिरी और शीर्षक कहानी है। इस कहानी में तीन प्राणी आते हैं जैसे– कुत्ता, गधा और सूअर जूठे पत्तलों पर जूझते तीनों प्राणियों को मार भगाने के कारण एक स्थान पर इकट्ठे होकर तीनों प्राणी दुःखी होकर अपने–अपने धर्म के प्रतिनिधित्व करते हुए हिंदू धर्म के

अतंर्गत स्थित जात–पाँत, छुआ–छूत, स्पृश्य–अस्पृश्य, वेद–पुराण आदि के नाम पर अवर्णों को कैसे लूटकर सवर्ण अपने ब्राह्मणत्व को कायम रखना चाहता है। इससे संबंधित लंबी चर्चा में तीनों महाप्राणी भाग लेते हैं।

यहाँ तीनों महाप्राणियों को हिंदू पुराण में भगवान का अवतार माना गया साक्षात विष्णु अवतारी सूअर माना जाता लेकिन सूअर को मारकर हत्या कर दिया जाता है। इसीलिए इस्लाम धर्म अपनाने की इच्छा जाहिर है गधे अपनी आशंका सूअर सामने पेश की। कुत्ते भी क्षत्रिय धर्म का प्रतिनिधित्व करते हुए क्षत्रिय का नाम लेने कारण गुस्सा प्रकट किया सूअर क्षत्रियों के बारे में भी विस्तार बताता है। साथ सनातन धर्म कई राज की बातों का भी जिक्र करता अंत सनातन धर्म नीतियों और परिणामों बारे सूअर और कुत्ते सुनाता है। ये दोनों प्राणी का इस्लामी होने के बात सुनकर हँसते भारतीय ईसाईयों किस तरह ऊँच–नीच का भेदभाव घर कर गया है इसका विवरण प्रस्तुत करते ब्राह्मणवाद के बारे गंभीर चिंता की है। भारत जितने भी मुसलमान हैं वे के हिंदू शूद्र हैं। ये ब्राह्मणवाद को नहीं मानते इनको समाप्त करने बात सूअर ने और अतं गधे और कुत्ते धर्म रक्षा के लिए अपने–अपने मुकाम पर चलने अनुमति लेते वहाँ से निकलते इस्लाम इस माता का भार कहानी कमलापुर, जिसमें ब्राह्मण लोग रहते सुखदेव जहाँ चमार और मुशहार रहते हैं जो अछूत है। कारणवश सुखदेव के परिवर्तन के कारण कुछ परिवर्तन भी स्वतः लगे। सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक स्थिति में सुधार आने लगा। इससे अंग्रेजी में बी.ए पास किया।

कमलापुर के लुच्चा मिश्र की गाय मर जाती है। उसे उठाकर फेंकने के ब्राह्मणों सुखदेव टोला के लोगों पर दबाव लगते हैं। लेकिन टोला लोगों स्वतंत्र व्यवहार और विचार करने के कारण उनके रहन–सहन में परिवर्तन हुआ था। भी गाँव में कोई जानवर मर जाता है चमार लोगों उसे उठाने का रिवाज था। लेकिन आज ही लोग मरी गाय को उठाने को तैयार नहीं होते। कमल बीच समझाता दिये हैं। हमारे लोग भी यह नहीं उठायेंगे। ब्राह्मणों द्वारा तोड़े गये परंपरा के बारे में बताते कमल कहता है– ***"बूटन मिसिर अडां बेचता है। क्या ब्राह्मणों की परंपरा है? गंदा पंडे चाय बेचता है सबकी जूठी प्याली धोता है क्या ब्राम्हणों की परंपरा है?... आदि।"***[12] ब्राह्मणों के बीच इस विषय को लेकर वाद–विवाद चलता है। ऐसे वाद–विवाद में दिन ढल जाता है। लोगों को पता ही नहीं चलता कमलापुर के सभी गाँव से बाहर एकत्र हैं जैसे गाँव में प्लेग हो गया हो। ब्राह्मणों को लगने लगा कि मरी गाय सड़ने लगी है। सहान से साँस लेना मुश्किल है। ब्राह्मण सब निर्णय लेते हैं और बहुत मुश्किल से मरी गाय को गढ़े में पहुंचाते हैं। सुखदेव टोला के लोगों ने कमल को सूचना दी कि ***"गाय दफन कर दी गयी। गाय के साथ–साथ ब्राह्मणवाद दफन हो गया।"*** कमल ने मुस्कुराकर कहा।

निष्कर्षः

हिंदी दलित कहानीकारों में बुद्धशरण हंस जी का नाम आदर के साथ लिया जाता है। इनकी कहानियों में दलित समाज की उन्नति, खोखली आर्थिक योजनाएँ, दलित राजनैतिक जीवन, हिन्दू धर्म

की मानसिकता के कारण दलितों में परिवर्तन, दलित शोषण के विविध रूप, छूआछूत की भावना, दलित नारी शोषण, दलित नारी चेतना जैसे अनेक पहलुओं को दर्शाने की कोशिश की है।

संदर्भः

[1] डॉ. सुशीला टाकभीरे, संघर्ष, पृ. सं. 16.
[2] डॉ. दयानंद बटोही, सुरंग, पृ सं. 52.
[3] ओमप्रकाश वाल्मीकि, प्रमोशन पृ सं. 48.
[4] ओमप्रकाश वाल्मीकि, कुडाघर, पृ सं, 57.
[5] ओमप्रकाश वाल्मीकि, कुडाघर, पृ सं, 57.
[6] ओमप्रकाश वाल्मीकि, कुडाघर, पृ सं, 58.
[7] ओमप्रकाश वाल्मीकि, शवयात्रा, पृ सं. 39.
[8] ओमप्रकाश वाल्मीकि, शवयात्रा, पृ सं. 39.
[9] ओमप्रकाश वाल्मीकि, शवयात्रा पृसं 46.
[10] ओमप्रकाश वाल्मीकि, प्रमोशन, पृ सं, 46.
[11] ओमप्रकाश वाल्मीकि, दिनेशपाल जाटव उर्फ दिग्दर्शन, पृ सं. 69.
[12] ओमप्रकाश वाल्मीकि, बैल और सलाम खाल, पृ.सं. 33.

IJOMRC